8929 - सन्देष्टाओं पर ईमान की वास्तविकता

प्रश्न

पैगंबरों पर विश्वास रखने का क्या अभिप्राय है ?

विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है।.

अल्लाह की प्रशंसा के बाद : पैग़ंबरों पर ईमान लाने में चार चीजें सम्मिलित हैं :

पहला

: सुदृढ़ रूप से इस बात की पुष्टि करना कि अल्लाह तआला ने हर उम्मत (समुदाय) में उन्हीं में से एक रसूल भेजा है जो उन्हें केवल एक अल्लाह की इबादत करने और उसके अतिरिक्त जिसकी भी पूजा की जाती है उसका इंकार करने की दावत देते थे, और यह कि वे सब के सब सच्चे, पुष्टि किये हुये, नेक, पारसा, संयमी और विश्वस्त हैं, और इस बात की पुष्टि करना कि अल्लाह तआला ने उन्हें जिस चीज़ के साथ भेजा था उन सब को उन्हों ने पहुँचा दिया, न तो उसे छुपाया और न उस में परिवर्तन किया, और न तो उन्हों ने अपनी तरफ से उस में एक अक्षर की वृद्धि की और न ही उस में कुछ कमी किया : "रसूलों पर तो केवल पहुँचा देना है।" (सूरतुन्नह्ल :35)

और यह की वे सभी, प्रथम रसूल से लेकर अंतमि पैग़ंबर तक, असल इबादत और उसके मूल की दावत देने पर एक मत हैं, और वह तौहीद है इस प्रकार की आस्था, कथन और कर्म के द्वारा सभी प्रकार की इबादतें केवल अल्लाह के लिए की जायें और उसके सिवा जिन चीज़ों की भी पूजा की जाती है उन का इंकार किया जाये, इस का प्रमाण अल्लाह तआला का यह फरमान है : "हम ने आप से पहले जो भी पैग़म्बर भेजे हैं उनकी तरफ यही वह्य भेजी है कि मेरे (अल्लाह के) अलावा कोई (सच्चा) पूज्य नहीं, तो तुम मेरी ही इबादत करो।" (सूरतुल अम्बिया :25)

तथा अल्लाह तआला का यह फरमान : "और हमारे उन नबियों से मालूम करो जिन्हें हम ने आप से पहले भेजा था कि क्या हम ने रहमान के सिवाय दूसरे पूज्य निर्धारित किये थे जिन की इबादत की जाये ?" (ज़ुख़रुफ :45)

और इनके अलावा अन्य बहुत सी आयतें भी हैं।

जहाँ तक फर्ज़ इबादतों और शरीअत के फ़ुरूअ (अर्थात् शाखाएँ, जो अनिवार्य नहीं हैं) का संबंध है तो इन (पैग़ंबरों) पर नमाज़ और रोज़ा इत्यादि में से जो चीज़ें फर्ज़ होती है वह दूसरों पर फर्ज़ नहीं होती हैं, और इन पर अल्लाह की तरफ से परीक्षा के तौर पर ऐसी चीज़ें हराम होती हैं जो दूसरों के लिए हलाल होती हैं : "ताकि तुम्हें आज़माये कि तुम में सब से अच्छा अमल करने वाला कौन है।" इसका प्रमाण अल्लाह तआला का यह फरमान है : "तुम में से प्रत्येक के लिए हम ने एक धर्म-शास्त्र और मार्ग निर्धारित कर दिया है।" (सूरतुल-माईदा :48) इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा इस आयत की तफ्सीर में कहते हैं : एक रास्ता और एक तरीक़ा। और इसी के समान मुजाहिद, इक्रमा और मुफ़स्सेरीन के कुछ गिरोहों का भी कथन है।

सहीह बुखारी (हदीस संख्या :3443) और सहीह मुस्लिम (हदीस संख्या :2365) में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "अंबिया किराम अल्लाती भाई हैं उनकी माँयें विभिन्न हैं और उनका धर्म एक है।" अर्थात् अंबिया मूल सिद्धांत में एक हैं और वह तौहीद है जिसके साथ अल्लाह तआला ने प्रत्येक पैग़ंबर को भेजा, और जिस पर प्रत्येक उतरने वाली किताब आधारित है, और उनकी शरीअतें, आदेश और प्रतिषेद्ध, हलाह और हराम में विभिन्न हैं, क्योंकि अल्लाती भाई के बाप एक होते हैं और उनकी मायें विभिन्न होती हैं।

जिस ने उनमें से किसी एक की रिसालत (पैग़म्बरी) को अस्वीकार किया उस ने समस्त रसूलों के साथ कुफ्र किया, जैसा कि अल्लाह तआला का फरमान है : "नूह के सम्प्रदाय ने भी रसूलों को झुठलाया।" (सूरतुश्-शोअरा : 105) इस आयत में अल्लाह तआला ने नूह के सम्प्रदाय को समस्त रसूलों को झुठलाने वाला ठहराया है, हालाँकि उनके झुठलाने के समय नूह के अतिरिक्त कोई अन्य रसूल था ही नहीं।

दूसरा

: जिन रसूलों का नाम हमें ज्ञात है उन पर उनके नामों के साथ ईमान लाना, जैसे मुहम्मद, इब्राहीम, मूसा, ईसा और नूह अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम, और जिन रसूलों का उल्लेख सार (इज्माली) रूप से किया गया है और उनका नाम हमें मालूम नहीं है उन पर सार (इज्माली) रूप से हमारे ऊपर ईमान लाना अनिवार्य है, जैसाकि अल्लाह तआला ने फरमाया : "रसूल उस चीज़ पर ईमान लाये जो उनकी तरफ अल्लाह की ओर से उतारी गयी और मुसलमान भी ईमान लाये। यह सब अल्लाह तआला और उसके फरिश्तों पर, और उसकी किताबों पर, और उसके रसूलों पर ईमान लाये, हम उसके रसूलों में से किसी के बीच अन्तर नहीं करते।" (सूरतुल बक़रा : 285)

तथा फरमाया : "नि :सन्देह हम आप से पूर्व भी बहुत से रसूल भेज चुके हैं, जिन में से कुछ की घटनाओं का वर्णन हम आप से कर चुके हैं तथा उन में से कुछ की कथाओं का वर्णन तो हम ने आप से किया ही नहीं।" (सूरत ग़ाफिर : 78)

तथा हम इस बात पर ईमान रखते हैं कि समस्त नबियों के समाप्तिकर्ता (मुद्रिका) हमारे पैग़ंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम हैं, अत : आप के बाद कोई नबी नहीं है, जैसाकि अल्लाह तआला का फरमान है : "(लोगो !) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं, किन्तु आप अल्लाह के पैग़म्बर और तमाम नबियों के खातम (मुद्रिका) हैं।" (सूरतुल अहज़ाब :40)

तथा बुखारी (हदीस संख्या :4416) और मुस्लिम (हदीस संख्या :2404) में सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तबूक की तरफ निकले और अली रज़ियल्लाहु अन्हु को (मदीना का) प्रतिनिधि नियुक्त कर दिया, तो उन्हों ने कहा कि क्या आप मुझे बच्चों और औरतों में प्रतिनिधि बना रहे हैं, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "क्या तुम्हें यह बात पसंद नहीं है कि तुम मेरे निकट ऐसी ही हो जाओ जिस तरह कि हारून मूसा अलैहिस्सलाम के लिए थे, किन्तु मेरे बाद कोई नबी नहीं है।"

और यह कि अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को प्रतिष्ठा प्रदान किया है और आप को अन्य नबियों के बीच महान विशेषताओं से विशिष्ट किया है, जिन में से कुछ यह हैं :

1- अल्लाह तआला ने आप को सभी इंसानों और जिन्नों की ओर पैग़ंबर बनाकर भेजा है, जबकि इस से पहले नबी विशिष्ट रूप से अपनी क़ौम की ओर भेजे जाते थे।

2- अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आप के दुश्मनों पर एक महीना की दूरी पर रुअब (दबदबा) के द्वारा मदद की है।

3- आप के लिए धरती को मिस्जद (नमाज़ पढ़ने का स्थान) और पवित्रता का साधन बना दिया है।

5- आप के लिए गनीमत का धन हलाल कर दिया गया है जबकि आप से पूर्व किसी के लिए हलाल नहीं किया गया था।

5- महान शफाअत से आप को सम्मानित किया गया है। इनके अतिरिक्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अन्य बहुत सी विशेषतायें भी हैं।

तीसरा

: रसूलों की जो सूचनायें विशुद्ध रूप से प्रमाणित हैं उनकी पुष्टि करना।

चौथा :

जो रसूल हमारी ओर भेजे गए हैं उनकी शरीअत पर अमल करना, और वह समस्त नबियों के समाप्तिकर्ता (मुद्रिका) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं जो समस्त मानव जाति की ओर संदेशवाहक बनाकर भेजे गए हैं, अल्लाह

तआला का फरमान है : "(हे मुहम्मद,) सौगन्ध है आपके रब (पालनहार) की ! यह मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि आपस के समस्त विवादों (मतभेदों) में आप को न्याय कर्ता न मान लें, फिर जो फैसला आप उन में कर दें उस के प्रति अपने हृदय में किसी प्रकार की तंगी और अप्रसन्नता न अनुभव करें, बल्कि सम्पूर्ण रूप से उसको स्वीकार कर लें।" (सूरतुन-निसा : 65)

ज्ञात होना चाहिए कि रसूलों पर ईमान लाने के बहुत बड़े परिणाम और लाभ हैं, जिन में से कुछ यह हैं :

1- बन्दों पर अल्लाह तआला की कृपा और अनुकम्पा का ज्ञान प्राप्त होता है कि उस ने उनकी ओर रसूल भेजे ताकि वह उनके लिए अल्लाह तआला के मार्ग को दर्शायें और अल्लाह तआला की इबादत (उपासना और आराधना) की विधि बतलायें, क्योंकि मानव बुद्धि स्वयं उसका ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकती।

2- इस महान उपकार पर अल्लाह तआला का आभारी (शुक्रगुज़ार) होना।

3- अम्बिया और रसूलों (अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम) से प्रेम और उनका आदर और सम्मान करने तथा उनकी प्रतिष्ठा योग्य उनकी प्रशंसा और सराहना करने का उत्साह उत्पन्न होता है, क्योंकि वे अल्लाह के रसूल हैं, और इस लिए भी कि उन्हों ने अल्लाह की इबादत व उपासना, उसकी रिसालत (संदेश) के प्रसार और बन्दों की शुभचिन्ता (ख़ैरख्वाही) का कर्तव्य पूरा कर दिया।

और अल्लाह तआला ही सर्वश्रेष्ठ ज्ञान रखता है।

देखिये : (आ`लामुस्सुन्नह अल-मन्शूरह पृ0 97-102) तथा (शैख इब्ने उसैमीन की शर्हुल उसूल अस्सलासह पृ0 95, 96)